



सरस्वती संगम



राजभाषा ई-पत्रिका-2021
महाकवि जयशंकर प्रसाद विशेषांक
उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय,
बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली

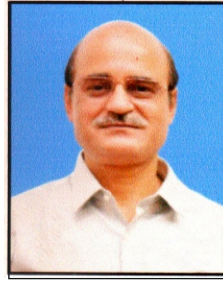


आशुतोष गंगल
महाप्रबन्धक
Ashutosh Gangal
General Manager



सत्यमेव जयते

उत्तर रेलवे
बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली-110001
NORTHERN RAILWAY
BARODA HOUSE, NEW DELHI-110001
☎ : 011-23387227 & 23384548 (Off.)
011-23384503 (Fax)



संदेश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि उत्तर रेलवे प्रधान कार्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा 'सरस्वती संगम' के वर्ष-2021 के प्रथम अंक को ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

आज के बदलते दौर में उत्तर रेलवे के विभिन्न क्षेत्रों में डिजिटल कार्यों को बढ़ावा देने के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं, इसी कड़ी में राजभाषा विभाग द्वारा सरस्वती संगम पत्रिका का ई-वर्जन जारी करना हर्ष की बात है। ई-पत्रिका जारी करने से लागत में तो कमी आएगी, हम पेपर रहित कार्य प्रणाली की ओर भी अग्रसर होंगे।

राजभाषा विभाग द्वारा रेलवे के अधिकारियों और कर्मचारियों के लेख, कहानी व कविता आदि संकलित करके एक पत्रिका के रूप में प्रकाशित करना सराहनीय प्रयास है। पत्रिका के माध्यम से मनोरंजक जानकारी तो मिलती ही है, इसके अलावा लेखन कला को भी बढ़ावा मिलता है।

उत्तर रेलवे का अधिकांश हिस्सा 'क' क्षेत्र में आता है इसलिए हम सब का कर्तव्य है कि कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें तथा अपने अधीनस्थों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित भी करें। हमें सरल एवं सहज शब्दों का प्रयोग करना चाहिए ताकि किसी को भी समझने में कोई कठिनाई न हो।

मैं, इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े समस्त अधिकारियों/रेलकर्मियों को बधाई देता हूँ। पत्रिका के निरंतर प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(आशुतोष गंगल)

डॉ. सत्येन्द्र नारायण पाण्डेय
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त/रे.सु.ब.



उत्तर रेलवे
प्रधान कार्यालय, बड़ौदा हाउस
नई दिल्ली-110001



संदेश

राजभाषा पत्रिका "सरस्वती संगम" के इस वर्ष के प्रथम अंक को समय की मांग के अनुरूप "ई-पत्रिका" के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह विशेषांक महाकवि जयशंकर प्रसाद जी को स्मरण करते हुए उन्हीं को समर्पित है।

उत्तर रेलवे के अधिकारियों और कर्मचारियों ने अपनी लेखनी से ज्ञानवर्धक रचनाएं भिजवाकर इस पत्रिका में चार चांद लगा दिए हैं। इस पत्रिका के माध्यम से रोचक जानकारियां उपलब्ध कराना और राजभाषा के प्रयोग-प्रसार को बढ़ाना ही हमारा ध्येय है। आप सब से अनुरोध है कि आइए, हम सब मिलकर सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें।

मुझे आशा ही नहीं अपितु विश्वास है कि यह ई-पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देने में सफल होगी। पत्रिका के नियमित प्रकाशन हेतु मेरी ओर से सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

(डॉ. सत्येन्द्र नारायण पाण्डेय)

डॉ. रोशनी खुबचंदानी
उप महाप्रबंधक/राजभाषा



उत्तर रेलवे,
प्रधान कार्यालय, बड़ौदा हाउस,
नई दिल्ली-110001



'सम्पादकीय'

उत्तर रेलवे की राजभाषा पत्रिका 'सरस्वती संगम' के वर्ष-2021 के प्रथम अंक को ई-संस्करण के रूप में आपके समक्ष रखते हुए मुझे गर्व का अनुभव हो रहा है। महाकवि जयशंकर प्रसाद जी की स्मृति में इस पत्रिका को 'विशेषांक' के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

पूरे विश्व में कोविड-19 महामारी के कारण अनेक क्षेत्रों में बदलाव आया है। हर क्षेत्र में पेपर रहित कार्य प्रणाली को बढ़ावा दिया जा रहा है। राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों को वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से कराया जा रहा है। कार्यशालाएं और प्रतियोगिताएं ऑनलाइन आयोजित की जा रही हैं। सरकारी कामकाज भी 'ई-ऑफिस' में किया जा रहा है। उसमें हिंदी में कार्य करने का विकल्प है। केवल थोड़े से प्रयास और इच्छा-शक्ति की आवश्यकता है। इस पत्रिका में प्रस्तुत रचनाएं साहित्यिक दृष्टिकोण से उपयोगी होने के साथ-साथ ज्ञानवर्धक भी हैं।

आशा है कि ई-पत्रिका के रूप में 'सरस्वती संगम' रेलकर्मियों की भावनाएं आप तक पहुंचाने में सफल होगी।

शुभकामनाओं सहित,


(डॉ. रोशनी खुबचंदानी)



सरस्वती संगम

उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय राजभाषा ई-पत्रिका - 2021

इस अंक में

	विषय	रचनाकार	पृष्ठ सं.
संरक्षक आशुतोष गंगल महाप्रबंधक	हिंदी साहित्य के महाकवि - जयशंकर प्रसाद	डॉ. रोशनी खूबचंदानी	1
	कामायनी-लघु मीमांसा	आशीष कुमार मिश्र	2
डॉ. सत्येन्द्र नारायण पाण्डेय	जयशंकर प्रसाद	राजेन्द्र कुमार	4
मुख्य राजभाषा अधिकारी	हरियाली	जितेन्द्र पाल सिंह	6
एवं	साधना की एक कड़ी - दोहा	राम करन	9
प्रधान मुख्य सुरक्षा	दृष्टिकोण	पंकज शर्मा	10
आयुक्त/रे.सु.ब.	सही और गलत	अर्चना मीणा	12
	अमीर	डॉ. ऋतु मंजरी	13
संपादक	आयुर्वेद और कोराना महामारी	वंदना खजूरिया	14
डॉ. रोशनी खूबचंदानी	मन और मर्म की भाषा - हिंदी	डॉ. एच.पी. सक्सेना	15
उप महाप्रबंधक/राजभाषा	ख्वाहिशें	प्रशांत शर्मा	16
	ये पुरुषों की दुनिया	नीता सक्सेना	17
संपादन सहयोगी	सियाचिन	अर्चना कौल	18
गुरमीत सिंह	गुज़रा ज़माना	मोहम्मद उस्मान	19
वरिष्ठ अनुवादक	कोरोना - विशेष कार्यों की झलकियां		20
एवं	राजभाषा प्रयोग-प्रसार के विभिन्न कार्यक्रम		21
सोम प्रकाश	संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण - झलकियां		23
कनिष्ठ अनुवादक	'अमीर खुसरो' हिंदी पुस्तकालय एवं वाचनालय		24

संपर्क सूत्र - राजभाषा विभाग, उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली-110001.

फोन (रेलवे) - 32251

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं। संपादक मंडल इसके लिए किसी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है।



हिंदी साहित्य के महाकवि - जयशंकर प्रसाद

लेख

डॉ.रोशनी खुबचंदानी

जयशंकर प्रसाद आधुनिक काल के एक सशक्त कवि थे। उनकी भाषा खड़ी बोली है एवं इस पर संस्कृत का प्रभाव है। छायावाद के चौथे स्तंभ के रूप में इस आदरणीय कवि की रचनाएं बहुत मधुर एवं सरस हैं। इनका जन्म 30 जनवरी 1889 को वाराणसी उत्तर प्रदेश में हुआ। प्रसाद जी ने अपनी कविताएं 'कलाधर' के नाम से लिखनी शुरू की। कालांतर में यह नाम कहीं छुप-सा गया एवं '**जयशंकर प्रसाद**' इस पूरे नाम के साथ ही यह महाकवि हमारे सामने आते हैं।

छायावाद की मधुरता, सौंदर्य, कल्पनाशीलता इनके काव्य में दृष्टिगोचर होती है। भले ही कविता इनका पहला प्रेम था, पर इन्होंने कई नाटक, कहानी संग्रह, उपन्यासों की भी रचना की। इनके महाकाव्यों में काननकुसुम, आंसू, लहर, कामायनी, प्रेमपथिक, नाटकों में एक घूँट, स्कन्दगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, राज्यश्री कहानीसंग्रहों में आंधी, प्रतिध्वनि, आकाशद्वीप, इंन्द्रजाल, संदेह तथा चित्रमंदिर बहुत प्रसिद्ध हैं। इन्होंने कुछ नाटकों की भी रचना की, जिनके नाम इस प्रकार हैं:- कंकाल, तितली और इरावती। इन सब रचनाओं ने इन्हें अमर कर दिया। प्रसाद जी को सबसे ज्यादा ख्याति महाकाव्य "**कामायनी**" के कारण मिली। कामायनी हिंदी साहित्य के

आधुनिक काल की सबसे सशक्त रचनाओं में से एक मानी जाती है। इसका प्रकाशन 1936 में हुआ। यह आधुनिक छायावादी युग का सर्वोत्तम और प्रतिनिधि हिंदी महाकाव्य है। "चिंता" से प्रारंभ कर "आनंद" 15 सर्वां के इस महाकाव्य में मानव मन की विविध अंतर्वृत्तियों का क्रमिक उन्मीलन बड़े कौशल से किया गया है। मानवजाति के आदि से अब तक के जीवन के विकास को बड़े मनोवैज्ञानिक एवं सटीक ढंग से चित्रित किया गया है। प्रसाद जी की भाषा संस्कृतनिष्ठ हिंदी है, जिसकी मधुरता कविता पढ़ने पर ही महसूस की जा सकती है। कला की दृष्टि से कामायनी छायावादी काव्य का सर्वश्रेष्ठ प्रतीक माना जा सकता है। इस महाकाव्य के कथानक के पात्र के रूप में लज्जा, सौंदर्य, श्रद्धा और ईड़ा का मानव रूप में अवतरण हिंदी साहित्य की अनुपम निधि है। इस पर दार्शनिकता का प्रभाव भी दिखाई पड़ता है। डॉ. नगेन्द्र के अनुसार '**कामायनी**' मानव चेतना के विकास का महाकाव्य है। कामायनी एक प्रतीकात्मक काव्य है, जिसमें मनु, श्रद्धा, ईड़ा क्रमशः मन बुद्धि, मानव, आसुरी भाव, धर्म के प्रतीक हैं। मानव भावों को इतनी सूक्ष्मता से वर्णित करने वाले इस चितरे को मेरा शत-शत नमन।

उप महाप्रबंधक/राजभाषा

उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

कामायनी - लघु मीमांसा

लेख

आशीष कुमार मिश्र

जयशंकर प्रसाद छायावाद काव्य आंदोलन के प्रमुख एवं अग्रणी हस्ताक्षर हैं। छायावाद को काव्य-धारा के रूप में एक विशिष्ट पहचान देने में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। 'प्रेम पथिक' से 'कामायानी' तक प्रसाद का काव्य विकास अप्रतिम है। प्रसाद का मूल्यांकन करते हुए आलोचक रामस्वरूप चतुर्वेदी समरसता और संगीत दो संदर्भों को महत्व देते हैं। समरसता प्रसाद का जीवन दर्शन है और वह अपने बहुत सारे अनुभव संगीत की शब्दावली में व्यक्त करते हैं। प्रसाद के नाटक "स्कंद गुप्त" की देवसेना समूची सृष्टि की व्याख्या संगीत के रूप में करती है, उसका कहना है---

"तू अब तक सोई है आली

आंखों में भरे विहागरी....."

आलोचक रमेश चंद्र शाह ने प्रसाद को रहस्यवादी कवि ना कहकर बौद्धिक कवि कहा है। परंतु प्रसाद की बौद्धिकता अनुभूति एवं संवेदना में पगी प्रतीक-व्यवस्था में अभिव्यक्त होती है। "कामायानी" इसका प्रमाण है। यह एक क्लासिक कालजयी रचना है। कामायनी छायावाद की अकेली महाकाव्यात्मक कृति है, जो प्रसाद जी की कला का सर्वोच्च शिखर है। इसे हिंदी साहित्य जगत में तुलसीदास रचित रामचरितमानस के बाद दूसरा बेजोड़ महाकाव्य माना जाता है। इसे छायावाद का उपनिषद भी कहा जाता है। इस महाकाव्य में 15 सर्ग हैं। इस काव्य के नायक मनु और नायिका श्रद्धा हैं। मनु और श्रद्धा के माध्यम से मानव जीवन की संपूर्ण कहानी इस महाकाव्य में मनोवैज्ञानिक ढंग से कही गई है। यद्यपि इस काव्य की कहानी का आधार प्राचीन साहित्य है परंतु कवि ने इसे अपनी सुंदर कल्पना द्वारा एक अद्भुत छटा दी है। व्यक्तिवादी काव्य का चरमोत्कर्ष निश्चय ही कामायनी में हुआ है। यह मनु महाराज की मानसिक विकास और बाहरी

संघर्ष के रूप में आज व्यक्ति के विकासोन्मुख व्यक्तित्व की अंतः कथा है। मनु, श्रद्धा और इड़ा की पौराणिक कथा के माध्यम से कवि ने मानव के बौद्धिक एवं भावात्मक विकास को चित्रित किया है। मनु, श्रद्धा और इड़ा पौराणिक पात्र होते हुए भी प्रतीकात्मक हैं। मनु मन अर्थात् आज के आत्म-चेतन व्यक्ति का प्रतीक, श्रद्धा अर्थात् मनुष्य की सहज मानवीय भावना तथा इड़ा बुद्धि अर्थात् आधुनिक पूंजीवाद, सामाजिक वर्ग-भेद तथा शोषण की मान्यताओं के बुद्धि तत्व का प्रतीक है। आज के बुद्धिवादी युग में विडंबना ग्रस्त मानव के मूल कारणों पर प्रकाश डालते हुए कवि ने संतुलन स्थापित करने का संदेश दिया है---

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है, क्यों इच्छा पूरी हो मन की,

एक दूसरे से मिल न सके, विडंबना है जीवन की"

कामायनी महाकाव्य में मनोविकारों के सूक्ष्म चित्र, प्रकृति का मनोरम चित्र, नारी सौंदर्य एवं प्रणय के चित्र, प्रतीक चित्र, भाषा के चित्रात्मक लाक्षणिक चित्र जितने प्रभावकारी एवं सुंदर हैं, उनका उद्देश्य उतना ही लोकोपकारी है। यह महाकाव्य प्रसाद जी को एक युगांतकारी एवं मानवतावादी महाकवि सिद्ध करता है।

प्रसाद ने इसमें रति और निर्वेद दो भावों का बड़ा ही सुंदर एवं सफल प्रयोग किया है। इन्होंने अपने भावों को प्रकृति के माध्यम से चित्रित किया है। इनकी भाषा गहरे अर्थ और मधुर भावों से ओतप्रोत है। इसमें प्रेम एवं यौवन के चित्रों के साथ साथ मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक एवं सामाजिक स्थितियों का सुंदर वर्णन किया गया है।

प्रकृति में समरस जयशंकर प्रसाद का आनंदवाद ही कामायनी का वास्तविक कथा संदर्भ है, परंतु प्रसाद जी के मन में कोई विराट कल्पना है, जिससे इस महाकाव्य का सृजन संभव



हुआ। मुक्तिबोध का कहना है कि "प्रसाद अपनी दार्शनिक सोच के अनुसार चाहे जैसा प्रतीकत्व प्रदान करें, कामायनी की व्याख्या इसमें वर्णित मानव चित्रों के आधार पर ही की जा सकती है, कामायनी का मनु वेद -कालीन मनु नहीं है, प्रसाद का मनु उसी वर्ग का मनु है, जिस वर्ग के स्वयं जयशंकर प्रसाद हैं।"

जहां तक कामायनी में राष्ट्रीय चेतना देखने का सवाल है तो विश्वमंगल ही इसका मूल प्रयोजन है।

श्रद्धा कहती है----

"विश्व-भर सौरभ से भर जाए,

सुमन से खेलो सुंदर खेला।"

(श्रद्धा सर्ग)

कामायनी आधुनिक बोध और संवेदना का भी सफल संयोजन है। आज के पाठकों को "चिंता" सर्ग महत्वपूर्ण लगता है, जो मनु के अनुभव के रूप में उसके असहनीय अकेलेपन की कथा है। जल प्रलय की स्थिति में मनु का अकेलापन जिन प्रश्नों पर सोचने को विवश करता है, वही प्रश्न शायद आज के व्यक्ति को बेचैन करता है---

"दुख का गहन पाठ पढ़कर,

अब सहानुभूति समझते थे,

नीरवता की गहराई में,

मगन अकेले रहते थे।"

वस्तुतः प्रसाद ने इस महाकाव्य को एक आत्म परक फैंटेसी के रूप में लिखा है, जिसमें प्रसाद जी ने अपने समय के सामाजिक परिवेश, जीवन मूल्यों, सामयिकता का सम्मिश्रण करके इसे एक अमर ग्रंथ बना दिया है। आधुनिक जीवन दृष्टि के रूप में कामायानी के दर्शन की सीमाओं के बावजूद, कवि ने अनुभूतियों के चित्रण की एक नई कला प्रस्तुत की है इस विशिष्टता को "श्रद्धा" सर्ग पढ़ते हुए बार-बार अनुभव किया जा सकता है---

"संसार सागर की लहरों द्वारा उछाल फेंकी गई मणि की तरह तुम कौन हो,

जो इस सूने आंचल की शून्यता को एक नए आलोक से भर दे रहे हो"

मनु का ध्यान रति और काम की पुत्री श्रद्धा की ओर जाता है जो आभा और सुकुमारता का विलक्षण संयोग है----

"और देखा यह सुंदर दृश्य

नयन का इंद्रजाल अभिराम

कुसुम वैभव में लता समान

चंद्रिका से लिपटा घनश्याम"

श्रद्धा का यह सौंदर्य सम्मोहन तो उत्पन्न करता ही है, नई संस्कृति, नए विचार भी देता है।

अंत में, कामायनी को छायावादी काव्य कला के सर्वोत्तम प्रतीक का अवतरण कहा जा सकता है, जिसमें श्रद्धा, इड़ा, लज्जा, सौंदर्य आदि का मानवीकरण अत्यंत सजीवता और प्रासंगिकता के साथ किया गया है।

कनिष्ठ अनुवादक

राजभाषा विभाग,

प्रधान कार्यालय, उत्तर रेलवे



खग कुल कुल कुल-सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा।

जीवन परिचय

प्रसाद जी का जन्म माघ शुक्ल 10 संवत् 1946 संवत् वि. तदनुसार 30 जनवरी ई.) को काशी के सराय गोवर्धन में हुआ। इनके पितामह बाबू शिवरतन साहू दान देने में प्रसिद्ध थे और एक विशेष प्रकार की सुरती (तम्बाकू) बनाने के कारण 'सुँघनी साहु' के नाम से विख्यात थे। इनके पिता बाबू देवीप्रसाद जी कलाकारों का आदर करने के लिये विख्यात थे। इनका काशी में बड़ा सम्मान था और काशी की जनता काशीनरेश के बाद 'हर हर महादेव' से बाबू देवीप्रसाद का ही स्वागत करती थी। किशोरावस्था के पूर्व ही माता और बड़े भाई का देहावसान हो जाने के कारण 17 वर्ष की उम्र में ही प्रसाद जी पर आपदाओं का पहाड़ ही टूट पड़ा। कच्ची गृहस्थी, घर में सहारे के रूप में केवल विधवा भाभी, कुटुंबियों, परिवार से संबद्ध अन्य लोगों का संपत्ति हड़पने का षड्यंत्र, इन सबका सामना उन्होंने धीरता और गंभीरता के साथ किया। प्रसाद जी की प्रारंभिक शिक्षा काशी में क्रीस कालेज में हुई, किंतु बाद में घर पर इनकी शिक्षा का व्यापक प्रबंध किया गया।

घर के वातावरण के कारण साहित्य और कला के प्रति उनमें प्रारंभ से ही रुचि थी और कहा जाता है कि नौ वर्ष की उम्र में ही उन्होंने 'कलाधर' के नाम से ब्रजभाषा में एक सवैया लिखकर 'रसमय सिद्ध' को दिखाया था। उन्होंने वेद, इतिहास, पुराण तथा साहित्य शास्त्र का अत्यंत गंभीर अध्ययन किया था। वे बाग-बगीचे तथा भोजन बनाने के शौकीन थे और शतरंज के खिलाड़ी भी थे। वे नियमित व्यायाम करनेवाले, सात्विक खान पान एवं गंभीर प्रकृति के व्यक्ति थे। वे नागरी प्रचारिणी सभा के उपाध्यक्ष भी थे।

जयशंकर प्रसाद जी का देहान्त 15 नवम्बर, सन् 1937 ई. में हो गया। प्रसाद जी भारत के उन्नत अतीत का जीवित वातावरण प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त थे। उनकी कितनी ही कहानियाँ ऐसी हैं जिनमें आदि से अंत तक भारतीय संस्कृति एवं आदर्शों की रक्षा का सफल प्रयास किया गया है और 'आँसू' ने उनके हृदय की उस पीड़ा को शब्द दिए जो उनके जीवन में अचानक मेहमान बनकर आई और हिन्दी भाषा को समृद्ध कर गई।

रचनाएँ:

उन्होंने कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास और आलोचनात्मक निबंध आदि विभिन्न विधाओं में रचनाएँ की। प्रसाद जी की रचनाओं में जीवन का विशाल क्षेत्र समाहित हुआ है। प्रेम, सौन्दर्य, देश-प्रेम, रहस्यानुभूति, दर्शन, प्रकृति चित्रण और धर्म आदि विविध विषयों को अभिनव और आकर्षक भंगिमा के साथ आपने काव्यप्रेमियों के सम्मुख प्रस्तुत किया है। ये सभी विषय कवि की शैली और भाषा की असाधारणता के कारण अछूते रूप में सामने आये हैं। प्रसाद जी के काव्य साहित्य में प्राचीन भारतीय संस्कृति की गरिमा और भव्यता बड़े प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत हुई है। आपके नाटकों के गीत तथा रचनाएँ भारतीय जीवन मूल्यों को बड़ी शालीनता से उपस्थित करती हैं। प्रसाद जी ने राष्ट्रीय गौरव और स्वाभिमान को अपने साहित्य में सर्वत्र स्थान दिया है। आपकी अनेक रचनाएँ राष्ट्र प्रेम की उत्कृष्ट भावना जगाने वाली हैं। प्रसाद जी ने प्रकृति के विविध पक्षों को बड़ी सजीवता से चित्रित किया है। प्रकृति के सौम्य-सुन्दर और विकृत-भयानक, दोनों स्वरूप उनकी रचनाओं में प्राप्त होते हैं।

इसके अतिरिक्त प्रकृति का आलंकारिक, मानवीकृत, उद्दीपक और उपदेशिका स्वरूप भी प्रसादजी के काव्य में प्राप्त होता है। 'प्रसाद' प्रेम और आनन्द के कवि हैं। प्रेम-मनोभाव का बड़ा सूक्ष्म और बहुविध निरूपण आपकी रचनाओं में हुआ है। प्रेम का वियोग-पक्ष और संयोग-पक्ष, दोनों ही पूर्ण छवि के साथ विद्यमान हैं। 'आँसू' आपका प्रसिद्ध वियोग काव्य है। उसके एक-एक छन्द में विरह की सच्ची पीड़ा का चित्र विद्यमान है; यथा-

जो धनीभूत पीड़ा थी, मस्तक में स्मृति-सी छापी।

दुर्दिन में आँसू बनकर, वह आज बरसने आयी।।

प्रसादजी का सौन्दर्य वर्णन भी सजीव, सटीक और मनमोहक होता है। श्रद्धा के सौन्दर्य का एक शब्द चित्र दर्शनीय है-

नील परिधान बीच सुकुमार, खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।

खिला हो ज्यों बिजली का फूल, मेघ-वन बीच गुलाबी रंग।।

'प्रसाद' हिन्दी काव्य में छायावादी प्रवृत्ति के प्रवर्तक

हैं। 'आँसू' और 'कामायनी' आपके छायावादी कवित्व के परिचायक हैं। छायावादी काव्य की सभी विशेषताएँ आपकी रचनाओं में प्राप्त होती हैं।

काव्य रचनाएँ

जयशंकर प्रसाद की काव्य रचनाएँ हैं: कानन कुसुम, महाराणा का महत्व, झरना (1918), आँसू लहर, कामायनी (1935) और प्रेम पथिक। प्रसाद की काव्य रचनाएँ दो वर्गों में विभक्त है : काव्यपथ अनुसंधान की रचनाएँ और रससिद्ध रचनाएँ। आँसू लहर तथा कामायनी दूसरे वर्ग की रचनाएँ हैं। उन्होंने काव्यरचना ब्रजभाषा में आरम्भ की और धीरे-धीरे खड़ी बोली को अपनाते हुए इस भाँति अग्रसर हुए कि खड़ी बोली के मूर्धन्य कवियों में उनकी गणना की जाने लगी और वे युगवर्तक कवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

काव्यक्षेत्र में प्रसाद की कीर्ति का मूलाधार 'कामायनी' है। खड़ी बोली का यह अद्वितीय महाकाव्य मनु और श्रद्धा को आधार बनाकर रचित मानवता को विजयिनी बनाने का संदेश देता है। यह रूपक कथाकाव्य भी है जिसमें मन, श्रद्धा और इड़ा (बुद्धि) के योग से अखंड आनंद की उपलब्धि का रूपक प्रत्यभिज्ञा दर्शन के आधार पर संयोजित किया गया है। उनकी यह कृति छायावाद और खड़ी बोली की काव्यगरिमा का ज्वलंत उदाहरण है। सुमित्रानंदन पंत इसे 'हिंदी में ताजमहल के समान' मानते हैं। शिल्पविधि, भाषासौष्ठव एवं भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से इसकी तुलना खड़ी बोली के किसी भी काव्य से नहीं की जा सकती है।

कहानी संग्रह

कथा के क्षेत्र में प्रसाद जी आधुनिक ढंग की कहानियों के आरंभयिता माने जाते हैं। सन् 1912 ई. में 'इंदु' में उनकी पहली कहानी 'ग्राम' प्रकाशित हुई। उन्होंने कुल 72 कहानियाँ लिखी हैं। उनके कहानी संग्रह हैं: छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आंधी और इन्द्रजाल।

उपन्यास

प्रसाद ने तीन उपन्यास लिखे हैं। 'कंकाल', में नागरिक सभ्यता का अंतर यथार्थ उद्घाटित किया गया है। 'तितली' में ग्रामीण जीवन के सुधार के संकेत हैं। प्रथम यथार्थवादी उपन्यास हैं; दूसरे में आदर्शोन्मुख यथार्थ है। इन उपन्यासों के द्वारा प्रसाद जी हिंदी में यथार्थवादी उपन्यास लेखन के क्षेत्र में

अपनी गरिमा स्थापित करते हैं। 'इरावती' ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया इनका अधूरा उपन्यास है जो रोमांस के कारण ऐतिहासिक रोमांस के उपन्यासों में विशेष आदर का पात्र है। इन्होंने अपने उपन्यासों में ग्राम, नगर, प्रकृति और जीवन का मार्मिक चित्रण किया है जो भावुकता और कवित्व से पूर्ण होते हुए भी प्रौढ़ लोगों की शैल्पिक जिज्ञासा का समाधान करता है।

नाटक

प्रसाद ने आठ ऐतिहासिक, तीन पौराणिक और दो भावात्मक, कुल 13 नाटकों की सर्जना की। 'कामना' और 'एक घूँट' को छोड़कर ये नाटक मूलतः इतिहास पर आधृत हैं। इनमें महाभारत से लेकर हर्ष के समय तक के इतिहास से सामग्री ली गई है। वे हिंदी के सर्वश्रेष्ठ नाटककार हैं। उनके नाटकों में सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना इतिहास की भित्ति पर संस्थित है। उनके नाटक हैं:

स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, जन्मेजय का नाग यज्ञ, राज्यश्री, कामना, एक घूँट।

निबंध

प्रसाद ने प्रारंभ में समय-समय पर 'इंदु' में विविध विषयों पर सामान्य निबंध लिखे। बाद में उन्होंने शोधपरक ऐतिहासिक निबंध, यथा: सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य, प्राचीन आर्यवर्त और उसका प्रथम सम्राट आदि: भी लिखे हैं। ये उनकी साहित्यिक मान्यताओं की विश्लेषणात्मक वैज्ञानिक भूमिका प्रस्तुत करते हैं। विचारों की गहराई, भावों की प्रबलता तथा चिंतन और मनन की गंभीरता के ये जाज्वल्य प्रमाण हैं।

पुरस्कार

जयशंकर प्रसाद को 'कामायनी' पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्त हुआ था।

वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी
प्रधान कार्यालय, उत्तर रेलवे,
बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली.



हरियाली

कहानी

जितेंद्र पाल सिंह

कपूर साहेब नहाने जा रहे थे, तभी दरवाजे पर घंटी बजी और कुछ शोरगुल सुनाई दिया। श्रीमती कपूर ने दरवाजा खोला। पीछे से कपूर साहेब भी तौलिये में लिपटे हुए दरवाजे पर पहुंचे। वर्माजी और उनकी श्रीमती जी ऊंचे स्वर में बोल रहे थे। ऐसा रोज-रोज नहीं चलेगा। आज फिर आपके बच्चों ने हमारे घर की बाहरी दीवार पर लकीरें खींचकर दीवार को गंदा कर दिया। और तो और सीढ़ियों पर आपने बड़े-बड़े गमले रखे हुए हैं। आपने उनमें पानी डाला और वो सारा सीढ़ियों में फैल गया। कितना कीचड़ हो गया है।

कपूर साहेब को सारा माजरा समझ में आ गया। सात मंजिलों के अपार्टमेंट में चौथी मंजिल पर उनके सामने के फ्लैट में वर्मा परिवार पिछले महीने शिफ्ट हुए थे।

काफी समय से वह फ्लैट खाली पड़ा था। फ्लैट में रहने से पहले उन्होंने रेनोवेशन कराया था। अंदर-बाहर रंग-रोगन भी करवाया था। कपूर साहेब अपने नये पड़ोसी के आगमन से खुश थे। लेकिन कुछ ही दिनों में उनकी यह खुशी काफूर हो गई। दरअसल वर्माजी और उनकी श्रीमती जी हर दूसरे दिन कोई न कोई शिकायत लेकर सुबह-सुबह उनके घर पर आ धमकते। आज आपने ये कर दिया, आज आपने वो कर दिया। उन्हें रोज समझाना पड़ता कि आस-पड़ोस में कुछ न कुछ चलता रहता है। थोड़ा सहना भी चाहिए एक-दूसरे को। कपूर साहेब उन्हें समझाते कि आपकी दीवार हमेशा नई तो रहेगी नहीं। उन पर दाग-धब्बे पड़ेंगे और मिट्टी धूल भी पड़ेगी। जरा बच्चों ने उन पर कुछ लकीरें खींच दी तो क्या फर्क पड़ता है। जहां तक गमलों को रखने का सवाल है, पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए हम सभी को इसके प्रति जागरूक होना चाहिए। इतना समझाने के बावजूद भी

वर्माजी का गुस्सा शांत नहीं होता। आखिर कपूर साहेब उन्हें शाम को घर आने का न्योता देते, क्योंकि सुबह-सुबह कपूर साहेब को तैयार होकर ऑफिस जाना होता है। वर्मा परिवार बुदबुदाते हुए वापस अपने घर चले जाते।

श्रीमती कपूर दरवाजा बंद कर कपूर साहेब पर बरसने लगीं। आपके इस शौक के कारण आस-पड़ोस के लोग हमसे बहस करने लगे हैं। आपसे कितनी बार कहा है कि सीढ़ियों से गमलों को हटा दीजिए।

लोगों को आने-जाने में कितनी तकलीफ होती है। आप गमलों में पाइप से पानी डालते हैं। कितना कीचड़ हो जाता है। वर्माजी ठीक ही तो कहते हैं। किसी दिन कोई फिसलकर गिर गया, तो लेने के देने पड़ जाएंगे।

कपूर साहेब सब कुछ अनसुना कर नहाने चल पड़े।

दरअसल कपूर साहेब को बागवानी का शौक है और शहर में कंक्रीट के जंगलों में इतनी जगह नहीं कि वे अपना शौक पूरा कर सकें। वे तो ऊंची इमारत के अधर में वास कर रहे हैं। न वे जमीन पर हैं और न ही आसमान में। शहरों में ऊंची-ऊंची इमारतें बन रही हैं। भूतल में गाड़ियों की पार्किंग की जगह होती है और रहने के लिए पहली मंजिल से शुरू होकर ऊपर तक बहुमंजिली फ्लैट बने होते हैं। जमीन की कमी के चलते इन फ्लैटों के आकार अपेक्षाकृत छोटे होते हैं। इनमें लोग रहते तो हैं, लेकिन खुले मन से जीते नहीं। उस पर अत्याधुनिक उपकरणों की भरमार। रात-दिन बिजली की रोशनी, गर्मियों में एसी की ठंडी हवा और जाड़े में गर्म हवा का ब्लोअर। खिड़की-दरवाजे सब बंद। प्राकृतिक हवा और रोशनी का कोई प्रवेश नहीं। कपूर साहेब जैसे चंद्र प्रकृति प्रेमी लोग इन कंक्रीट के जंगलों में नई किरण लाने की कोशिश करते हैं।



वे डिब्बेनुमा अपने फ्लैटों की बॉलकनी, खिड़की और सीढ़ियों में छोटे-बड़े गमलों में पौधे लगाते हैं।

आखिर एक दिन वर्मा परिवार शाम को उनके घर आते हैं। कपूर साहेब ने उनका खुले मन से स्वागत किया। उन्होंने अपने नये पड़ोसी की आवभगत के लिए विभिन्न प्रकार के फलों से सुसज्जित प्लेटें एवं ताजे फलों के रसों के गिलास मेज पर रखे। वर्मा परिवार यह सब देखकर दंग रह गए।

आमतौर पर लोग मेहमानों को स्नैक्स के साथ चाय, कोल्ड ड्रिंक सर्व करते हैं। वर्मा परिवार ने पहले तो ना-नुकर किया, लेकिन श्रीमती कपूर के विशेष आग्रह पर उन्होंने इस अनूठे जलपान का रसास्वादन किया।

‘यार, फल-फ्रूट तो हम अपने घर में भी खाते हैं, लेकिन उनमें ऐसा स्वाद नहीं।’ वर्माजी ने आश्चर्य प्रकट किया। ‘तुम लोग जो फल-फ्रूट लाते हो, वे सब केमिकल युक्त होते हैं। उन्हें मसालों से पकाया जाता है। कच्चे फलों को कम समय में पकाकर बाजार में बेचा जाता है। कपूर साहेब ने उनकी जिज्ञासा को शांत किया। कपूर साहेब की पत्नी ने अपने पति की बात को आगे बढ़ाया- ‘भाई साहेब, बाजार में जब आप फल-सब्जी खरीदते हैं, तो वे चमकदार और ताजे दिखाई देते हैं। घर में लाते ही दूसरे दिन उनके रंग बदल जाते हैं और उनका स्वाद भी अलग होता है।’

श्रीमती वर्मा ने भी हामी भरी कि खाने पीने की लगभग सभी चीजों में तो मिलावट होती है। आखिर खाएं तो क्या खाएं। अब तो बाजार में आर्गेनिक खेती के नाम पर भी ताजे एवं शुद्ध फलों एवं शाक-सब्जियों की भी भरमार है।

‘तभी तो हम आपसे पूछ रहे हैं, आपने ये फल-फ्रूट कहां से लिए। यहां की मार्केट के तो लग नहीं रहे।’ वर्माजी ने जानना चाहा।

श्रीमती कपूर ने उन्हें बताया कि इनके भाई गांव में खेती-

बाड़ी करते हैं। अपने खेतों में वे गेहूं, चावल जैसी फसलों के साथ-साथ शाक-सब्जियां भी उगाते हैं। उनके बागान में केले, आम, पपीते, अमरूद जैसे विभिन्न फलों के अनेक पेड़ लगे हैं। वहां से जब भी कोई यहां आता है, वे उनके हाथों मौसमी फल, सब्जी भिजवाते रहते हैं। हमारा भी महीने में एकाध चक्कर लग जाता है। परिवार में मेल-मिलाप भी हो जाता है और हमें भी शहर के दमघोंटू माहौल से राहत मिल जाती है।

वर्मा जी ने उन्हें बीच में रोककर कहा- ‘ये तो बहुत अच्छी बात है। आपको गांव से शुद्ध एवं ताजा फल और सब्जियां मिल जाती हैं। फिर यहां आपने खामखां इतने सारे गमले क्यों रखे हुए हैं? इससे दूसरों को कितनी परेशानी होती है।’

श्रीमती कपूर ने उत्तर दिया- ‘इनका वश चले तो ये हर तरफ गमलों का अंबार लगा दें। इनसे कितनी बार कहा कि आपका यह बागवानी का शौक यहां नहीं चलने वाला। इस शौक को पूरा करने के लिए किसी खुली जमीन की तलाश करें। लेकिन ये सुनते कहां है। हर दूसरे दिन गमले या पौधे लाकर बेतरतीब से फैला देते हैं। सारी संभाल तो मुझे करनी पड़ती है।’

वर्माजी की पत्नी ने अपनी बात रखी- ‘बहनजी, बागवानी का शौक तो इन्हें भी बहुत है। लेकिन शहर में भाग-दौड़ इतनी है कि और कामों को पूरा करने के लिए फुरसत ही नहीं मिलती।’

‘शहरी जीवन में समय तो किसी के पास भी नहीं होता। सभी की अपनी व्यस्तताएं हैं। फिर भी इंसान चाहे तो बहुत कुछ कर सकता है। समय को एडजस्ट करना पड़ता है।’ कपूर साहेब ने अपनी बात जारी रखी- ‘वर्माजी, हमें यह जानकर बहुत खुशी हुई कि आपको भी प्रकृति से लगाव है। फिर हमारी आपस में तकरार क्यों। हम मिलजुलकर ऐसा कुछ करेंगे कि हमारे अपार्टमेंट का वातावरण भी संतुलित रहे और एक-दूसरे को कोई तकलीफ भी न



हो।'

वर्मा जी ने हामी भरी। दोनों परिवारों ने सौहार्दपूर्ण वार्तालाप को समाप्त किया और वर्मा दंपति अपने घर लौट आए।

कुछ दिनों बाद कपूर साहेब ने वर्मा जी के साथ सलाह-मशवरा करके ऐसे पौधों का चयन किया जो उन दोनों के फ्लैटों की खाली जगह में पर्याप्त रोशनी में पनप सकें। कुछ हैंगिंग गमले लिए। उन्होंने बागवानी विभाग से संपर्क कर वर्टिकल गार्डन की जानकारी ली और उसके मुताबिक अपने फ्लैटों की दीवारों में खांचे बनवाकर लगवाए। उन्होंने फूलों के अलावा ऐसी शाक-सब्जियों को लगाने की पहल की जो उनकी दैनिक रसोई में काम आ सकें। खाद-पानी की भी समुचित व्यवस्था की।

समय के साथ इन गमलों में लगाए गए पौधे विकसित होते गए और उनमें फूल और सब्जियां आने लगी। इस बीच यदा-कदा बाधाएं भी आईं, लेकिन उन्होंने हर बाधा का डटकर सामना किया और उनका समाधान निकाला। तरतीब से लगाए गए गमलों से दोनों के फ्लैटों का सौंदर्य ता बड़ा ही, उनकी रसोई में ताजी शाक-सब्जियां भी बनने लगीं।

अब वर्माजी की पहले की तरह शिकायत करने का सिलसिला भी थम गया और अब उन्हें अपनी दीवारों को खराब होने की चिंता से मुक्ति भी मिल गई। गमलों में रंग-बिरंगे फूलों और सब्जियों को देखकर दोनों परिवार बहुत खुश हुए। दोनों परिवारों ने फ्लैटों के सामने इस हरियाली भरे परिदृश्य में ग्रुप फोटो लिए।

अपार्टमेंट के बाकी निवासियों ने भरपूर तारीफ की तो कपूर साहेब ने अपने इस हरियाली अभियान को और विस्तार देने की सोची। अन्य लोगों की सर्वसम्मति से कपूर साहेब ने अपार्टमेंट के भूतल से लेकर ऊपर की मंजिलों तक उपलब्ध जगह के मुताबिक सुविधानुसार गमलों में पेड़-पौधे लगाने का बीड़ा उठाया।

अपार्टमेंट की एसोसिएशन ने भी कपूर साहेब के हरियाली अभियान में हरसंभव सहयोग देने का वचन दिया। वैसे तो अपार्टमेंट की बाऊंड्री वाल के साथ कई छोटे-बड़े पेड़-पौधे लगे हुए हैं, लेकिन उचित रखरखाव नहीं होने के कारण वे मुरझाए से नजर आते हैं।

कपूर साहेब ने वर्माजी और अन्य स्वयंसेवियों की मदद से गमलों में विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे लगाए। इस बार उन्होंने बेल वाले पौधों को भी लगाया। हर नेक काम में कुछ अड़चने भी आती हैं। कभी कोई शिकायत लेकर आ जाता। कभी कोई गमले तोड़ जाता। जाने-अनजाने पौधों को नुकसान पहुंचा देता। आखिर कोई इन गमलों एवं पेड़-पौधों की देखभाल के लिए एक माली भी लगा लिया गया जो नियमित रूप से इनकी सिंचाई भी करता और इन पर पूरी निगरानी भी रखता। समय बीतता गया। एक दिन ऐसा आया कि इन सभी की मेहनत रंग लाई और पूरा अपार्टमेंट रंग-बिरंगे फल-फूलों से भर उठा। कपूर साहेब और वर्माजी इस सौंदर्य को देखकर फूले नहीं समा रहे। उन्होंने अपनी मेहनत एवं लगन से अपार्टमेंट के निवासियों के चेहरे पर एक नई रंगत ला दी है। पेड़-पौधों से लिपटी ईंट-पत्थर की यह इमारत एक नये आकर्षक स्वरूप में खड़ी है। दूर से ही अपार्टमेंट में हरियाली अपनी छटा बिखेरती नजर आ रही है।

**वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी/निर्माण
कश्मीरी गेट, दिल्ली**



साधना की एक कड़ी - दोहा

राम करन

अपनी रेल

सुशिल अंतिल

1. किसका खयाल, कौन सी मंजिल नजर में है।
सदियां गुजर चुकी, जमाना सफर में है।।
2. मोहब्बत की खातिर, मोहब्बत किए जा।
क्या काम खिदमत का, खिदमत के लिए जा।।
3. यहां तक तजुर्बे ने, कर दिया बेबाक आंखों को।
कि पहचानी हुई सूरत भी, पहचानी नहीं जाती।।
4. कुछ और बढ़ाना है, अभी पाए ताकत को।
मंजिल के निशानात को, मंजिल न समझिए।।
5. तेरा गम, तस्वीर मेरी, बनकर इंसान हो गया।
यार का बख्शा हुआ, गम राहते जाम हो गया।।
6. तन्हा नहीं हूं, इश्क की मंजिल की राह में।
दुनियां को अपने साथ लिए जा रहा हूं मैं।।
7. जो सिकुड़ता नहीं, वह विस्तार को कैसे प्राप्त हो
सकता है?
विस्तार को पाना उसी के हक में है, जो सिकुड़ने
की कला जान चुका है।।
8. उसे अपना हर रूप प्यारा है, तभी तो उसने अपने
को सब में संवारा है।
उसके हर रूप से मोहब्बत ही करो, ऐसे में कर्म के
संसार को बदलना गवारा है।।
9. यह मूर्ति मिट्टी की, प्रभु का वक्त पाकर इंसान
बनी।
गुरु का ज्ञान पाकर, यह मिट्टी दुनिया की
भगवान बनी।।

लेखा विभाग, आर टी आई सेल
प्रधान कार्यालय, बड़ौदा हाउस,
नई दिल्ली

देखो अपनी रेल चली,
करती कितने मेल चली
मोटे को भी पतले को भी
लेकर अपने संग चली।
नहीं करती है ये मतभेद
सबको मंजिल तक पहुंचाती,
सर्दी-गर्मी, हो बरसात
ये कभी न छोड़े साथ।
कुछ इठलाती कुछ मदमाती
करती कितने खेल चली
देखो अपनी रेल चली।
करती कितने मेल चली।
देखो इसकी शान निराली,
सबको हर्षित करने वाली
आओ इसका रखें ध्यान,
और बढ़ाएं इसका मान ।

मु.कार्या.अधी./यांत्रिक शाखा
बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली



दृष्टिकोण

कहानी

पंकज शर्मा

कार को मोड़ते हुए उसने अचानक दिल में आये ख्याल को पूरा करते हुए सड़क से नीचे उतार कर चाय के खोखे के पास ले जा कर खड़ा किया। 'गर्मागर्म चाय पी जाए', उसने सोचा था, 'आज शायद बरसों बाद इस तरह की चाय पी रहा हूँ, पहले तो पीते ही यही थे, परन्तु जब से...'। बाकी सब उसके अंदर ही रह गया था। चमचमाती, आलीशान कार को देख कर खोखे का मलिक तो क्या वहां चाय पी रहे अन्य लोग भी चौंक गए। जो बैठे थे वे एकदम से खड़े हो गए थे, और जो खड़े थे वे सावधान की मुद्रा में आ गए कि पता नहीं कौन साहब हैं?

'हाँ, साहब ही तो हो गया हूँ अब मैं, पचास लाख की तो गाड़ी ही है', उसकी गर्दन में स्वाभाविक सा अकड़ाव आ गया, जिसने शरीर को भी तान दिया था। चाय वाला तुरंत तीर की तरह सामने हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया कि जाने कौन साहब हैं, और क्या चाहिए? कहीं ये...? उसे अपने खोखे के खोने का फ़िक्र खाने लगा था। उसे हंसी-सी आ गयी, हाथ से इशारा करते हुए कहा, "एक चाय लाना बढ़िया सी।"

बुत में जान आई और खोखे वाले ने अपने लड़के को न कह कर, कहीं बाल-मजदूरी..., तुरंत खुद ही एक मैली-सी कुर्सी को जो उसकी पूँजी थी, पर कपड़ा मार कर साहब के पास बिछा दिया। वह उस पर बैठ गया।

उसने आसपास नज़र डाली- साधारण सी सड़क थी, और उसी तरह का वातावरण भी। एक सड़क किसी गाँव की तरफ कटती थी, जिसके किनारे पर दो-चार अस्थायी दुकाने थीं, और उनके पास ही एक जगह कुछ निर्माण कार्य चल रहा था, शायद गोदाम या कुछ और। उसने उचटती-सी एक नज़र उस पर भी डाली और घुमा ली। दूसरी तरफ कुछ मजदूरों ने अस्थायी आवास के तौर पर झुग्गियाँ-सी डाल रखी थीं। उसने एक नज़र उन पर भी फेंकी, लेकिन इस बार उसकी नज़र एक ऐसे दृश्य पर जा चिपकी कि फिर वह वहीं खो गया।

हल्की सर्दी का दिन था। सुबह का वक्त। आम घरों में इस समय उठ कर सुबह की चाय पीने का वक्त होता है, मगर

मजदूरों के लिए...। उसने देखा कि लकड़ी से आग जला कर उस पर कुछ पकाने के लिए पतीली चढ़ी हुई थी, 'शायद चाय...', उसने सोचा, और बाकी सारा परिवार- मजदूर, उसकी बीवी और तीनों बच्चे आग के आसपास घेरा बना कर बैठे हुए थे। 'आग भी सेंक रहे हैं, और बातें भी कर रहे हैं एक दूसरे से', वह ध्यान से देखने लगा।

"साहब चाय...", चाय वाला खड़ा था। हालांकि चाय का कप मटमैला सा था, पर उसने ज्यादा गौर नहीं किया, यहाँ इससे ज्यादा की उम्मीद उसे थी भी नहीं, सिवाय इसके कि कप अच्छे से साफ़ किया हुआ हो, जो चाय वाले ने पहले ही साहब के लिए कर दिया था।

उसने फिर नज़रें उसी तरफ गढ़ा दीं। पतीला उतर चुका था...। चाय नहीं, उसमें दाल थी, और तवा आग में तप रहा था। उस पर से फूले-फूले से फुल्के उतार कर मजदूर की बीवी बड़े फूले मन से अपने पति और बच्चों को खिला रही थी।

कुल एक ही थाली थी, और एक ही कटोरी, जैसा उसे नज़र आया। उस मजदूर ने पता नहीं पहला घास खुद खाया था, या अपने बच्चों से शुरुआत की थी, मगर चारों खा रहे थे। एक घास वह खुद खाता, फिर जिस भी बच्चे ने खा लिया होता उसे खिलाता, फिर खुद खाता, फिर बच्चों को खिलाता..., इसी क्रम को दोहराया जा रहा था।

'वाह, कितना अद्भुत नज़ारा है', वह आनंदित हो उठा। उसे अपना बचपन याद हो आया। वह और उसके भाई-बहन भी तो इसी तरह चूल्हे के आसपास खड़े हो जाया करते थे, और मां के हाथ की बनी गर्मागर्म रोटियां, दाल या साग-सब्जी के साथ खाया करते थे।

'क्या स्वाद था मां के हाथ का, और क्या मज़ा था खाने का', अचानक से वह एक बच्चा बन गया था। दिल किया कि जैसे अभी जा कर एक घास वह भी मुंह में डाल ले। 'ऊँह, यह मैं क्या सोचने लगा', उसे सोचना अजीब-सा लगा। मगर फिर उसके मिजाज ने करवट ली।

'आज मैं ऐसा सोचने से भी परहेज करने लगा हूँ, हालांकि अतीत में तो मैं ऐसा ही था। बड़ी जद्दोजहद और मेहनत-मशक्कत के बाद आज यहाँ तक पहुँचा हूँ। क्या कुछ नहीं किया मैंने यहाँ तक पहुँचने के लिए...। सच कहूँ तो खुद को भी झोंक दिया- न दिन की सुध, न रात को चैन, न बीवी की फ़िक्र, न बच्चों की चिंता, बस काम, काम और काम। तभी तो इतने बड़े मुकाम पर पहुँच पाया हूँ...। फर्श से अर्श तक का सफ़र तय किया है मैंने। आज मेरे पास वह सब कुछ है जिसकी मुझे चाहत थी- आलीशान बंगला, एक से बढ़ कर एक कार, जिसका मैं सदा से शौकीन रहा हूँ, नौकर-चाकर, जमीन-जायदाद, शेयर, धन-दौलत और करोड़ों का कारोबार, एक प्यारी सी बीवी और दो बच्चों का परिवार भी।'

मगर परिवार शब्द उसे कुछ अपरिचित सा लगा। 'इसे फैमिली कहना ही ज्यादा उचित रहेगा मेरे खयाल से, क्योंकि मेरे लिए तो यह सब एक औपचारिकता की तरह ही रही है। सिर्फ एक नाम का परिवार...। और यह सब सिर्फ मेरे ही कारण हुआ है', उसके दिल में एक टीस-सी उभरी, 'मैंने इन सब झंझटों में अपने परिवार पर ध्यान ही कहाँ दिया है इतने साल। राधिका सालों-साल मेरा साथ निभाती रही, चुपचाप बिना किसी शिकायत के या मांग के। मैंने भी कभी उसे किसी चीज के लिए रोका-टोका नहीं, मगर...। इसके बावजूद मैंने अपना समय उसे दिया ही कहाँ है, कम से कम उसके हिस्से का समय तो उसे दे दिया होता। मगर फिर मैं इतना सब कुछ कैसे प्राप्त कर सकता था', उसने दलील दी।

और यही दलील उसने तब भी दी थी जब राधिका ने कहा था, "सुनो सुमेश, राहुल और नीतिका अब बड़े हो रहे हैं, पैदा होने से अब तक तो मैंने उन्हें पाल-पोस लिया है, जब उन्हें मां की ही जरूरत थी, परन्तु अब...। अब उन्हें एक बाप की भी जरूरत है। थोड़ा समय निकाल कर इन बच्चों को भी दिया करो।"

"क्या करूँ राधिका, काम ही इतना है। इतना बड़ा कारोबार अकेले संभालना भी कोई बच्चों का खेल तो है नहीं। मेरी व्यस्तता तो तुम देखती ही रहती हो, तुमसे तो कुछ छिपा

नहीं है मेरा। और फिर मैं यह सब कुछ तुम्हीं लोगों के लिए ही तो कर रहा हूँ।" वही घिसा-पिटा फ़िल्मी संवाद उसके मुँह से निकला था।

"जानती हूँ बाबा, पर फिर भी मेरे लिए न सही, अपने बच्चों के लिए तो..., नहीं तो वे तुम्हें समझेंगे कैसे? और तुम भी उन्हें अपनी तरह का समझदार, अक्लमंद और हुनरवान कैसे बनाओगे? उनका मार्गदर्शन करना, उनको बुरे-भले की पहचान बताना, बाहर की दुनिया से वास्ता करवाना और उसमें रहने का सलीका बताना, और उनका भविष्य बनाना भी तो अब तुम्हारी जिम्मेदारी है। मेरा काम तो अब ख़त्म हो गया समझो", राधिका ने हंसकर हाथ झाड़ते हुए कहा।

"बात तो तुम्हारी सोलह आने सही है, पर क्या करूँ इस समय का...। खैर करता हूँ कुछ। फिलहाल तो राहुल को अपनी दसवीं और नीतिका को अपनी आठवीं कक्षा पूरी कर लेने दो। और हाँ, इसके अलावा जिस-जिस में दोनों की रुचि है, उनकी उन्हें कोचिंग करवा दो", उसने हिदायत दी, जो वह दे सकता था।

"वह तो मैं कर ही रही हूँ सुमेश साहब", राधिका ने मुस्कुरा कर कहा, "पढ़ने के अलावा दोनों की डांस और खेलों की कोचिंग भी करवा रही हूँ, जिस-जिस में दोनों की रुचि है। इसी चक्कर में बेचारे घनचक्कर की तरह कभी इधर तो कभी उधर चक्कर काटते रहते हैं। आपकी ही तरह अब उनके पास समय नहीं रहा आपके लिए।"

"बिलकुल सही कह रही हो", उसने हाँ में हाँ मिलाई, "कई-कई दिनों बाद ही मेरा और उनका सामना हो पाता है आजकल। मैं जब तक सुबह उठता हूँ, वे दोनों स्कूल जा चुके होते हैं, और रात को जब तक मैं घर आता हूँ वे दोनों सो चुके होते हैं। रोज यही चलता रहता है। सिर्फ रविवार को ही हम सब मिल पाते हैं, वह भी अगर दोनों में से किसी को कोई काम न आ पड़े तो। वैसे ज्यादातर तो मुझे ही बाहर जाना पड़ता है, भई व्यापारी जो ठहरा।" उसे महसूस तो होता था, मगर क्या करे, कारोबार भी तो देखना था।

"ये सब तो यूँ ही चलता रहेगा...। अब आपको अपने कारोबार को और बढ़ाने की तरफ नहीं, बल्कि अपने बच्चों को



कुछ बनाने पर ही ध्यान देना चाहिए मेरे खयाल से तो। बच्चे आगे खुद बढ़ा लेंगे इसे जितना बढ़ाना होगा”, राधिका बहुत समझ वाली थी, “और हमें कौन सा टाटा-बिड़ला बनना है या उनसे टक्कर लेनी है। भगवान की मेहर से सभी कुछ तो है हमारे पास...। इससे ज्यादा क्या चाहिए? ...और मैं तो पहले भी वैसी ही खुश थी आपके साथ, जैसी आज हूँ...। और बच्चों के लिए बहुत है...। बस सिर्फ थोड़ा वक़्त चाहिए उन्हें आपका, और वह भी वक़्त रहते, वर्ना कहीं...।”

राधिका के साथ-साथ वह भी थोड़ा..., 'नहीं-नहीं, वह समय रहते इस पर जरूर ध्यान देगा...।' और समय वैसे ही गुज़र रहा था, जैसे पहले।

पर आज जब वह एक जरूरी मीटिंग निपटा कर यहाँ से गुजरते हुए चाय पीने की इच्छा लिए रुका, और यह दृश्य देखा, तो उसे एहसास हुआ कि कहीं न कहीं वह बहुत बड़ी भूल कर रहा है। वह सोच रहा था, 'क्या फर्क है इस मजदूर और मुझमें। इसके पास कुछ भी नहीं है, और फिर भी वह अपने परिवार के साथ है तो कितना खुश है, आनंदित है। उसका परिवार उसका सब कुछ है- उसकी शक्ति, उसकी सम्पत्ति, धन-दौलत, उसका स्कून...। फिर उसके लिए बाकी की कमियां या जरूरतें होते हुए भी नहीं हैं।’

उसने अपने आप को कमतर महसूस किया, 'और मेरे पास सब कुछ होते हुए भी, परिवार भी है तो भी...। राधिका सही कहता है, क्यों मैं इस अंधी दौड़ में शामिल हूँ, जहाँ मेरा परिवार मेरी ही गलती से मुझसे पीछे छूटता जा रहा है। कल अगर वाकई देर हो गयी तो? मेरा बेटा या बेटी मेरे अभाव में कहीं किसी गलत रास्ते पर चल पड़े तो, या मुझे दोष देने लगे तो? धन-दौलत और सुख-सुविधाएँ ही तो सब कुछ नहीं हैं- न मेरे लिए और न उनके लिए...। तो फिर...? बच्चों की जरूरतें पूरी करना हर मां-बाप का फ़र्ज़ है, मगर उनका मार्गदर्शन करना, उन्हें प्यार देना भी तो उन्हीं का काम है, वर्ना वे भटक जाते हैं...। बच्चे अगर बिगड़ते हैं, या गलत रास्ते पर चलते हैं, तो उसके लिए वे नहीं, हम जैसे मां-बाप ही असली जिम्मेदार होते हैं...।’

उसने चाय का खाली कप ऐसे जमीन पर रखा जैसे खुद को भी जमीन पर ले आया हो। मजदूर परिवार पर एक एहसान भरी भरपूर दृष्टि डाली, जैसे उस दृश्य को सदा-सदा के लिए अपने दिल के एलबम में कैद करना चाहता हो, और मन ही मन दृढ़ संकल्प लेता हुआ चाय के पैसे चुका कर कार से अपने घर की तरफ रवाना हो गया।

इस दृश्य ने उसकी जिंदगी का पूरा दृष्टिकोण बदल दिया था।

कार्यालय अधीक्षक, कैएव्वा,
यांत्रिक शाखा, अम्बाला कैंट

सही और गलत

अर्चना मीणा

आखिर ये सही और गलत तय करता कौन है?
अगर जिंदगी सही है तो मौत गलत क्यों?
अगर होंठों की मुस्कान सही है तो
आंखों के आंसू गलत क्यों?
अगर ईश्वर का होना सही है
तो ईश्वर को ना मानना गलत क्यों?
अगर सब कुछ पाना सही है
तो कभी-कभी सब कुछ खोना गलत क्यों?
अगर पैसे कमाना सही है
तो भूख गलत क्यों ?
आखिर ये सही और गलत का
फासला तय किया किसने है।

लेखा सहायक,
उ.रे., प्रधान कार्यालय



अमीर

लघु कथा

डॉ ऋतु मंजरी

आज ब्लॉक में सुबह से ही सुगबुगाहट है फुसफुसाहट है -- गुप्ता जी को हार्ट अटैक हो गया, हार्ट अटैक हो गया वह आईसीयू में हैं। पास ही हॉस्पिटल में एडमिट है, तो पड़ोसियों का एक-एक करके उनकी पत्नी शोभा से मिलने का सिलसिला जारी है। चेहरा दिखा कर आते लोग अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में व्यस्त हो गए हैं। तभी मुझे भाभी जी एक बैग में सामान भरे हुए आती हुई दिखाई दीं, मैं जब से इस ब्लॉक में आई हूँ इनको ऐसे ही किसी की बीमारी में आते जाते देखती रहती हूँ। जब भी किसी को कोई परेशानी होती वह इसी तरह सेवा टहल में लग जाती "बीमारी उम्र देखकर नहीं आती" वह किसी से कह रही थीं, छोटे-छोटे बच्चे व शोभा (गुप्ता जी की पत्नी) को कुछ तो चाहिए ना, बिचारे क्या खाएंगे? रिश्तेदारों के आने-जाने का सिलसिला भी लगातार जारी है। सभी मिलजुल कर थोड़ा अफसोस जताकर चले जाते हैं, पर यह कहना नहीं भूलते कि "कुछ जरूरत हो तो बताओ, संकोच नहीं करो" शोभा सिर झुका कर चुप हो जाती है और वो फिर जल्दी आने की बात कर वापस चले जाते।

10 दिनों के बाद भी मैंने देखा भाभी जी का सुबह दोपहर शाम, बैग लेकर चाय नाश्ता खाना देने जाना और वापस मुस्कुराते हुए सब से बातें करते रहना। मेरे मन में कई सवाल एक साथ कौंधने लगते -- जरूर इनके घर में नौकर नौकरानी होंगे वरना कोई इतना कैसे कर सकता है? उम्र भी पचपन से कम नहीं होगी, बिल्कुल साधारण पर करीने से पहनी हुई साड़ी व माथे पर बड़ा सा लाल रंग का टीका उनपर खूब फबता। पति रिटायर्ड थे पर मुझे पता नहीं था वह क्या करते थे, बच्चे बाहर थे कभी-कभी आते जाते थे।

मैंने ठान लिया एक दिन उनके घर अवश्य

जाऊंगी, आखिर कैसे करती हूँ यह सब। पति के ऑफिस जाने के बाद मैंने करीब 11:00 बजे उनके उनके घर की बेल बजा ही दिया। वह दरवाजे पर आई और आश्चर्यजनक मुस्कुराहट से आंखें फाड़ कर बोली "ओहो कैसे आना हुआ" मैंने कहा "वैसे ही मिलने आ गई" वह बांह पकड़ कर मुझे अंदर ले गई। घर में घुसते ही चार लकड़ी की कुर्सियां करीने से रखी हुई थीं, बीच में एक छोटा सा मेज भी था जिस पर सुंदर सा लिहाफ बिछा हुआ था, आंगन में उनके पति तखत पर लेटे हुए धूप सेक रहे थे। मेरी आंखें उस बिल्कुल साधारण से घर के निरीक्षण में मशगूल थीं। भाभी जी ग्लास में पानी और साथ में पेठा लेकर आ गई, मुझे इसकी जरूरत नहीं थी लेकिन उनके प्यार के आगे मेरी एक ना चली। मैं रसोई तक उनके साथ गई तो आंखें फटी की फटी रह गई। बहुत ही पुराने से गैस के चूल्हे पर अस्पताल वाले गुप्ता जी के परिवार का खाना पक रहा था, बहुत ही थोड़े से बर्तन थे, जो करीने से लगे हुए थे पर उनके चेहरे की संतुष्टता उनकी छवि को मोहिनी बना रही थी। मैंने कहा आपकी हेल्प करूं, तो वह मुस्कुराते हुए बोलीं "बस पैक कर रही हूँ, आकर इन्हें (पति को) खाना दूंगी, हॉस्पिटल का समय हो गया है ना" और झोला लेकर मेरे साथ बाहर आ गई।

आज मुझे पता चला कि जिनकी आवश्यकताएं कम हैं और दिल में मानवता का जज्बा है, सही मायने में वही सबसे अमीर हैं। तभी तो लोग झुक-झुक कर उन्हें प्रणाम करते हैं और अनायास ही मेरा भी सिर झुक गया। मुझे आश्चर्य हुआ अरे मेरे अंदर के अमीरी का 'मैं' अचानक कैसे मर गया।

सेवानिवृत्त, लेखा विभाग,
उ.रे., प्रधान कार्यालय.

आयुर्वेद और कोरोना महामारी

लेख

वंदना खजूरिया

कोरोना महामारी के इस समय में इस संक्रमित बीमारी से बचने और इसे शरीर से खत्म करने के लिए आयुर्वेद की चर्चा लगातार सामने आई है आयुर्वेद ने जहां शरीर की रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाई और एक अहम भूमिका निभाई है, वहीं कई बार तो यह काढ़े के रूप में भी असरदार सिद्ध हुआ है। वायरस के लगातार बढ़ते फैलाव ने जहां एक तरफ चिंता का माहौल बनाया है वहीं दूसरी तरफ भारतीय जीवनशैली, स्वास्थ्य और प्राचीन औषधि की महत्ता को भी उजागर किया है।

समय-समय पर भारत सरकार द्वारा की गई सिफारिशों और प्रधानमंत्री जी के संदेश में भी यह पता चला कि इस समय हमें आयुर्वेद को अपनाना कितना हितकर है। आयुर्वेद में कोरोना जैसी महामारी को बढ़ने से रोकने के लिए क्षमता है। अगर हम सरल शब्दों में कहें तो स्वास्थ्य की रक्षा करना ही आयुर्वेद का उद्देश्य है। समय-समय पर आचार्यों ने जितने भी शोध किए उनसे यही उभर कर सामने आया है कि आरोग्य की प्राप्ति और संतुलित जीवन जीने के लिए हमें आहार, विहार, आचार और विचार पर ध्यान देना आवश्यक है यानी हमारा फूड, एक्टिविटी, हैबिट्स और थॉट्स पर समुचित लगाम देने की जरूरत है।

आइए आयुर्वेद के कुछ आसान से टिप्स जान लेते हैं जिससे हम अपने जीवन शैली में बदलाव ला सकते हैं। जिससे कि शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ सके और हम स्वस्थ जीवन जिएं।

जीवन आहार में सदैव गरम पानी का सेवन करें। नींबू का सेवन करें। ब्लैक टी में गुड़ मिला कर पिएं। इससे शरीर की शुद्धि होगी और साथ ही आयरन की पूर्ति भी होगी। ग्रीन टी भी लाभकारी है।

उचित विहार के अंतर्गत पर्याप्त नींद लें। फल और सब्जियों को गर्म पानी से धोकर ही उपयोग करें। ए.सी. का प्रयोग कम से कम करें। बाहर जाते समय मास्क एवं दस्ताने भी पहने। हाथ मिलाना, गले मिलना बंद करें। नमस्कार करें।

उचित विचार के अंतर्गत सकारात्मक मानसिकता बनाए रखें। अन्य लोगों का मनोबल बढ़ाएं।

उचित आचार के अंतर्गत शरीर की साफ-सफाई का ध्यान रखें। प्रतिदिन आधा घंटा योग या हल्का व्यायाम करें। स्वच्छ वस्त्र पहने तथा हाथों को सदैव स्वच्छ रखें। 15-20 मिनट तक व्यायाम करें। प्रतिदिन सुबह-शाम टहलने की आदत डालें। इससे पाचन संबंधी समस्याएं नहीं होंगी तथा शरीर में रक्त का प्रभाव भी बना रहेगा।

हम उचित आहार, विहार, आचार तथा विचार का पालन समय-समय पर करते रहें तो जीवन शैली में सकारात्मक बदलाव आता रहेगा।

इसी प्रकार हम प्रतिदिन अपनी दिनचर्या में कुछ वस्तुओं का प्रयोग करते हैं जिनको आयुर्वेद में औषधि द्रव्यों के रूप में माना गया है। इनका उपयोग भी निम्नलिखित रूपों में किया जा सकता है जैसे- मुनक्का, काली मिर्च, सोंठ, अदरक, तुलसी, दालचीनी, बड़ी इलायची का प्रयोग हम चाय में या खाने-पीने में कर सकते हैं। प्रतिदिन तिल के तेल की या बादाम रोगन की दो दो बूंदें अपनी नाक की नासिकाओं में डालें। दूध में हल्दी मिलाकर पिएं। नारियल तेल का सेवन करें। खाना बनाते समय जीरा, हल्दी, लहसुन, धनिया आदि का प्रयोग करें। गले में खराश हो तो लौंग के चूर्ण को शहद में मिलाकर लें। पुदीने का प्रयोग चटनी के रूप में करें। प्रतिदिन आंवला खाएं। गिलोय का प्रयोग करें। अश्वगंधा एवं हरड़ के चूर्ण का प्रयोग भी लाभकारी होता है। चवनप्राश का सेवन करें। आयुर्वेद कोरोना महामारी से बचाव में मुख्य रूप से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक है और इन वस्तुओं का कोई दुष्प्रभाव भी नहीं है।

आयुर्वेद की औषधियों का उपयोग भारतीय रसोई में हमेशा एक अहम भूमिका निभाता रहा है। इनका उपयोग हमारे शरीर की क्षमता को बढ़ाकर हमें हल्की-फुल्की बीमारियों से तो बचाता ही है अपितु हमारे इम्यून सिस्टम को भी तंदुरुस्त रखने में एक अहम भूमिका निभाता है। इसलिए पारंपरिक जीवन शैली एवं स्वास्थ्य प्रणाली को बनाए रखने के लिए आयुर्वेदिक औषधियों के युक्तिपूर्वक उपयोग की आवश्यकता है।

लेखा सहायक, लेखा विभाग
प्रधान कार्यालय, उत्तर रेलवे.



“मन और मर्म की भाषा - हिंदी”

लेख

डॉ.एच.पी. सक्सेना

वर्तमान समय में विश्व में करीब सात हजार भाषाएं और अनगिनत बोलियां प्रचलित हैं। जिनमें से एक हिंदी भी है। हिंदी संसार की दूसरी बड़ी भाषा है, जिसका उपयोग सर्वाधिक युवा आबादी करती है। हिंदी का व्यक्तित्व इसकी वर्णमाला के कारण विराट है। हिंदी की खासियत इसमें है कि जैसा बोला जाता है वैसा ही सुना जाता है और वैसा ही लिखा भी जाता है।

हिंदी में “अ” से अज्ञान से शुरू और “ज्ञ” से ज्ञानी बनाती है। इसीलिए कहा गया है कि :-

- भरत जैसा भाई नहीं,
- राम जैसा पुत्र नहीं
- सीता जैसी नारी नहीं,
- अनुसुइया जैसी माता नहीं,
- हिंदी - जैसी भाषा नहीं ।

हिंदी की वर्णमाला में अभिव्यक्ति है तथा मंत्र शक्ति है। हिंदी के...“मेरी मां ”... शब्द में जो मातृत्व भाव उभर कर आया है व अंग्रेजी के...“मम्मी”... शब्द में देखने को नहीं मिलता। अंग्रेजी आम खाना सिखाती है तो हिंदी जमीन में गढ़ कर पेड़ बनाना सिखाती है। भारतीय संस्कृति की जड़ों को हरा-भरा करने की शक्ति हिंदी के...“मेरी मां... शब्द में निहित है, क्योंकि भाषा में संस्कृति सांस लेती है और यह हमारी मातृभाषा है।

मातृभाषा से वह मौखिक लय प्रकट होती है जिसमें प्रकृति और परिवेश के साथ सामाजिक संघर्ष भी प्रकट होता है। उससे साहित्य और संस्कृति के सकारात्मक, माननीय, जनतांत्रिक तत्व भी सामने आते हैं। अपनी संस्कृति की जड़ों में जाकर हमें आत्मविश्वास की अनुभूति होती है।

मातृभाषा अपने माता-पिता से प्राप्त भाषा है, उसमें जड़ें हैं, स्मृतियां हैं। मातृभाषा एक भिन्न कोटि का सांस्कृतिक आचरण देती है, जो किसी अन्य भाषा के साथ

शायद संभव नहीं। मातृभाषा में अपनी कहावतें, लोक कथाएं, कहानियां, पहेलियां होती हैं जो सीधे हमारी स्मृति की धरती से जुड़ी होती हैं। मातृभाषा से अपने परिवेश व पर्यावरण का बोध होता है।

जब 15 अगस्त, 1947 को भारत आजाद हुआ तो इसके कुछ वर्षों बाद 14 सितम्बर, 1949 के संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हिंदी ही भारत की राजभाषा होगी। इसी महत्वपूर्ण निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिंदी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से संपूर्ण भारत में 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। भारतीय संविधान के भाग-17 के अध्याय की धारा 343(1) में इस प्रकार वर्णित है- “संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी।”

दुनिया भर में हिंदी बोलने वालों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है और दक्षिण भारत में भी इसकी स्वीकार्यता में कई गुना वृद्धि हुई है। केरल जैसे प्रदेशों में तो इसे काफी समय से सहजता से स्वीकार किया ही जा रहा है, लेकिन अब तमिलनाडू जैसे प्रदेशों में भी, जहां केवल राजनीति के लिए हिंदी का विरोध होता था, वहां भी जनमानस में इसकी पैठ बहुत मजबूत हो गई है। अब वैश्वीकरण के दौर में हिंदी विश्व की भाषा बन चुकी है।

केरल के हिंदी के प्रख्यात विद्वान और लेखक प्रो. जी.गोपीनाथन का कहना है कि..... “मैं सुनी-सुनाई बातों के आधार पर नहीं वरन् व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर कह रहा हूं कि विश्व फलक पर हिंदी की स्वीकार्यता बहुत तेजी से बढ़ रही है।”

हिंदी के अलावा तमिल, संस्कृत, अंग्रेजी, मलयालम, कन्नड़, रशियन, फ्रेंच आदि अनेक भाषाओं को जानने वाले प्रो. गोपीनाथन के मुताबिक मलयालम मातृभाषा होने के बावजूद उनको बचपन से ही हिंदी से एक विशेष स्नेह था। बच्चे मातृभाषा को जीवन में कभी भूल



नहीं पाते। जाहिर है जो मां की भाषा है, वही जिंदगी की भाषा भी है। मातृभाषा से हर चीज आसानी से सीखना संभव है - चाहे शिक्षा हो या अन्य विचार और सामान्य आचार-व्यवहार। हम बचपन से ही मातृभाषा के माध्यम से परिवार और समाज का साक्षात्कार करते हैं।

19 मार्च, 1928 को महात्मा गांधी ने कहा था कि.....“मातृभाषा की जगह कोई नहीं ले सकता। मुझे कुछ समय के लिए निरंकुश बना दें तो मैं विदेशी भाषा को तुरंत बंद कर दूंगा। ये बच्चों पर दबाव डालते हैं और रटने व नकल को प्रेरित करते हैं।” हिंदी भाषा पूरे देश में बोली, सुनी और पढ़ी जाती है। इसके रूप भले ही अलग-अलग हों, लेकिन स्वर एक ही है। भारत आगे बढ़ता हुआ देश है और हमारे युवा दुनिया में अपनी पहचान बनाने के लिए बड़ी मेहनत से जुटे हुए हैं। अब आपका समय है आगे बढ़ने का.....बढ़ रही है हिंदी, गढ़ रही है हिंदी, बदलते दौर के साथ युवा दे रहे हैं हिंदी को नई पहचान।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति एवं वैज्ञानिक डॉ. अब्दुल कलाम का कहना है..... “मैं एक अच्छा वैज्ञानिक इसलिए बन सका क्योंकि मैंने गणित और विज्ञान की शिक्षा मातृभाषा में प्राप्त की।”

मातृभाषा में संस्कृति श्वास लेती है, उसमें उसका स्पंदन दिखाई पड़ता है। हिंदी के प्रयोग से गौरव का बोध होना चाहिए। हमें अपने-अपने कार्य दिवस का पहला घंटा हिंदी को समर्पित करना चाहिए। सभी कार्य हिंदी में करें ताकि राजभाषा के प्रति सम्मान बना रहे। देश को एक सूत्र में बांधने के लिए भाषा का बहुत बड़ा योगदान होता है। भारत में बोली जाने वाली सैकड़ों भाषा की तरह हिंदी भाषा ने राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता बनाए रखने में सशक्त भूमिका निभाई है। मातृभाषा हमारी परम्परा में हमें परिष्कृत करती चलती है। वह हमें मिठास देती है, दूसरी भाषा नहीं दे सकती।

“अहिंदी को हिंदी कर दे, हिंदी में इतनी क्षमता है, जन-जन की बोली बन जाए, हिंदी में इतनी ममता है।”

58 बीडीए, पंचशीलनगर, भोपाल

ख्वाहिशें

प्रशांत शर्मा

वक्त के आइने में कुछ तस्वीर तेरी भी, मेरी भी।

आज लबों पर खामोशी तेरे भी, मेरे भी॥

आज तेरी मांग में जो सिंदूर है,

और होंठों पर जो सुर्ख लाली है।

कभी मेरी थी पर,

आज किसी और की॥

शायद ये वक्त की दीवारें इधर भी है उधर भी।

कौन कह सकता है, सब कुछ बदल जायेगा।

शायद खराब तकदीर तेरी भी, मेरी भी।

हो सकता सब कुछ बदल जाये।

गुजरा वक्त फिर वापस आ जाये।

पर कुछ नहीं बदलता इस जहां में।

मजबूरी तेरी भी, मेरी भी।

बेहतर है, खुशी से जी ले ये जिंदगी।

जो लिखा है लकीरों में।

ख्वाहिशें तेरी भी, मेरी भी।

मंडल यांत्रिक इंजीनियर/पावर

मुरादाबाद



ये पुरुषों की दुनिया

लेख

नीता सक्सेना

कभी सोचा नहीं था इस विषय पर लिखूंगी। मगर जैसे-जैसे बड़े होते गए तो मां-बाप, भाई-बहन, घर-परिवार, दोस्त, गांव-शहर, समाज और देश-दुनिया को समझने लगी। बचपन से यही सुनते आए हैं कि लड़का-लड़की एक समान होते हैं दोनों के अधिकार एक हैं, अवसर एक हैं मगर, परंतु, फिर भी लड़कियां वह सब क्यों नहीं कर पाती जो एक लड़का या पुरुष सहज ही अपने जीवन में कर लेता है। लड़कियां तो जहां 12-13 वर्ष की होती नहीं हैं कि ऐसा सपनों की दुनिया में भी खोती हैं कि जब तक उन्हें होश आता है तब तक कुछ भी करने का अवसर और उम्र दोनों निकल चुकी होती है और फिर कुछ ना कर पाने का दोष हम सारी उम्र दूसरों को देते हैं। वहीं एक लड़के को सारा ध्यान अपनी पढ़ाई, कैरियर और पैशन की तरफ होता है। वह अपने जुनून को पूरा करने में दिन-रात लगा रहता है। घर में भी कोई उसे कुछ नहीं कहता है बल्कि बढ़ावा ही देते हैं। वही लड़कियों के लिए पहली रोक-टोक तो घर से ही शुरू हो जाती है और कब वह पुरुषों पर निर्भर रहना सीख जाती है उसे खुद पता नहीं चलता। पहले पिता, भाई फिर पति, पुत्र पर उसकी निर्भरता युगों पुरानी है। इसे कोई खराबी नहीं मानता है। फिर हम किस हक से कहते हैं कि स्त्री-पुरुष बराबर हैं, हमें बराबरी का अधिकार चाहिए। यह अधिकार भी हम पुरुषों से मांगते हैं और मांगने से कभी कोई चीज नहीं मिलती है। वास्तव में अगर देखा जाए तो स्त्रियाँ ने कभी कुछ किया ही नहीं ना अपने लिए, ना दूसरों के लिए, ना देश- दुनिया या समाज के लिए। कुछ महिलाएं हैं जिनका योगदान प्रशंसनीय हैं मगर वे अपवाद ही हैं और जो कुछ नहीं करती हैं वह अपना “कुछ ना कर पाने” का ठीकरा भी पुरुषों के सिर या ईश्वर के सिर पर फोड़ती हैं।

यदि गहराई से या सूक्ष्मता से देखा जाए तो इस पूरी सृष्टि का निर्माण तो ईश्वर (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) ने किया है और इस सृष्टि को एक दुनिया बनाने में, इसे रहने लायक एक बेहतरीन स्थान बनाने के लिए जो कुछ भी चाहिए था वह कार्य हमेशा पुरुषों ने किया। हम केवल नेपथ्य में ही पड़े रहे और अपनी पीठ थपथपाते रहे। आगे बढ़ कर खुद कुछ करने का तो सपना भी कभी हमने नहीं देखा। इस दुनिया की एक-एक वस्तु सुई से लेकर ब्रह्मास्त्र तक सब पुरुषों ने बनाए हैं यहां तक कि केवल महिलाओं के उपयोग की वस्तुएं भी पुरुषों ने बनाकर हमें दी। हमने क्या किया ?

हमेशा समाचार पत्रों में, टीवी की खबरों में सुनते हैं कि आज फलां जगह उस बच्ची के साथ रेप हो गया, आज कहीं और छोटी बच्ची के साथ गैंगरेप हो गया। काश हम स्त्रियों ने अपने बचाव के लिए ही सही कोई खुफिया हथियार, कोई ऐसा मेकेनिज़्म या शील्ड बनाई होती जो हमें ऐसे समय में काम आती, कोई ऐसी दवाई बनाई होती जो खतरा भांप कर खा लेने से थोड़े समय के लिए ही सही हम भी भीम की तरह ताकतवर हो जाते और एक साथ दो चार को पछाड़ सकते। परंतु हमने ऐसा कुछ नहीं किया और शायद आने वाले समय में कोई पुरुष ही हमारे लिए कुछ ऐसा कर पाएं। उन पुरुषों को अभी से हृदय से अभिनंदन।

हम चाहे लाख दुहाई दे लें मगर सच्चाई यही है कि यह पुरुषों की दुनिया है हम तो बस पीछे ही चलते आए हैं और पीछे ही रह गए हैं।

वरिष्ठ अनुवादक
लेखा विभाग, प्र.का., उ.रे.

सियाचिन

लेख

ग्लेशियर का नाम आते ही मन में रोमांच सा जाग जाता है जो लोग ऊंची-2 पहाड़ियों का भ्रमण करते हैं, उनके लिए सियाचिन ग्लेशियर पर जाना समझो किसी एक सपने का पूरा होने के बराबर है, क्योंकि यहां पर आम भारतीय नागरिक का जाना मना है।

मुझे पता चला कि सियाचिन ग्लेशियर के लिए नाम मांगे जा रहें हैं। उत्तर रेलवे पथ व पर्वतारोहण संस्था के द्वारा। मन को एक बार लगा कि सपना पूरा होने का समय आ गया है क्योंकि टेलीविजन, यू-ट्यूब इन सब पर देखा है कि कैसे हमारे आर्मी के जवान वहां पर तीन महीने का मुश्किल समय वहां पर बिताते हैं। संसार में दूसरा सबसे बड़ा युद्ध क्षेत्र माना जाता है सियाचिन को, मैंने बिना समय गवां अपना फार्म भर दिया, पता चला कुल तीन फार्म ही जमा हुए हैं इसलिए आराम से मेरा चयन हो गया।

लेह जाने के लिए हवाई मार्ग ही ठीक रहता है क्योंकि रोड से दिल्ली से जाने में लगभग तीन दिन लग जाते हैं। इसलिए हम लोग हवाई मार्ग से ही लेह गए। हम तीन लोग भारतीय रेलवे से थे। लेह हवाई अड्डे पर उतरते ही सबसे पहले हमारा सामना माईनस तीन डिग्री तापमान से हुआ, बाहर ऐसी तेज हवा चल रही थी लगता था शरीर के आर-पार हो जाएगी, लेकिन हम लोगो ने गर्म जैकेट पहन रखी थी जिसके कारण बचाव हो गया। आर्मी ने हमारा स्वागत बड़ी ही गर्मजोशी के साथ किया। फिर हम सभी 40 लोगों को आर्मी के द्वारा बुक लेह पैलेस होटल में ठहराया गया। सब को रूम देने के बाद आर्मी के द्वारा हिदायत दी गई कि आज आप लोग बाहर घूमने ना जाएं क्योंकि हम कम तापमान वाले क्षेत्र से आए हैं हमारे शरीर को लेह के मौसम के अनुकूल होने में थोड़ा समय लगता है।

शाम को सभी 40 लोग जो अलग-अलग राज्यों से आए हुए थे उनको थोड़ी ब्रीफिंग दी गई कि क्या करना है, आपको क्या नहीं करना और हमें बताया गया कि एक सप्ताह यही आपका घर है। रोज सब लोगों का मेडिकल चैकअप होता था, जैसे ब्लड प्रेशर, हार्ट स्पीड, शरीर में आक्सीजन का लेवल कितना है।

40 लोगों में से 33 ही एक सप्ताह के लिए फिट पाए गए, 7 लोगों को वापस भेज दिया। इसके बाद हम 33 लोगों को आगे की बहुत ही कठिन यात्रा के लिए कह दिया गया। फिर हमें सियाचिन के बेस कैम्प ले जाया गया, सब का इस कठिन यात्रा से बुरा हाल था। सब का मेडिकल चैकअप होने के बाद यहां भी हमारे तीन साथियों को फिट ना होने के कारण वापस लेह भेज

अर्चना कौल

दिया गया, यहां पर हमें रोजाना यह सिखाया गया कि कैसे आप लोगों का ऊंची पर्वतश्रेणियों तक चढ़ना है और क्या-क्या सावधानियां रखनी है।

यहां पर ओ.पी. बाबा का मंदिर भी बना हुआ है। सुना है वो आज भी अपनी नौकरी रोज करते हैं, यदि कोई सिपाही सोता हुआ दिखता है तो वो उसको अपने तरीके से जगा देते हैं यहां पर ओ.पी. बाबा जी की बहुत मान्यता है। बिना इनकी परमीशन के कोई भी आर्मी का जवान या अधिकारी सियाचिन पर नहीं जाता है। हम लोगो ने भी वहां अपना नमन किया और आगे जाने की अनुमति मांगी।

बेस कैम्प तक तो ठीक ही था, परन्तु जैसे-जैसे एकलाईमजेशन के लिए ऊपर गए उतनी ही मुश्किलें आईं, पीने का पानी व बर्फ उबाल के मिलता था। रात को कैरोसिन आयल का



स्टोव पर बर्फ पिघलाने के लिए रखा जाता था जिससे टेन्ट के अन्दर गर्मी भी बनी रहती थी और सुबह में उस पानी को हम लोग प्रयोग करते थे।

हम लोगों को आर्मी की तरफ से वी.आई.पी सुविधाएं मिल रही थीं। सुबह उठने के बाद गरमा-गरम चाय, अंडे, मैगी और भी बहुत कुछ खाने को मिलता था, यह देख कर दुख भी होता



था कि वह लोग कितनी कठिन परिस्थितियों में वहां रहते हैं और हमारे लिए सब कुछ तैयार मिलता था।

सभी लोगों को पैराशूट से बनी सफेद ड्रेस दी गई, जूते बर्फ पर चलने वाले, बर्फ को काटने वाली कुल्हाड़ी साथ में एक रोप दी गयी जो कि बहुत कारगर साबित हुई। सफेद ड्रेस पहन कर अपने आप पर गर्व महसूस हो रहा था। आगे जाने के लिए सिर्फ 30 लोग ही पूरी तरह से फिट पाए गए। इनमें से मैं भी एक थी। छः-छः के ग्रुप में हम लोगों को एक रोप के द्वारा बांधा गया ताकि अगर कोई गिर जाता है तो उसको बचाया जा सके। वहां पर बहुत जगह पर गहरी-गहरी खाईयां थी। वो भी बर्फ से ढकी हुई पता नहीं चलता था कि कहां पैर रखना, क्योंकि बर्फ बहुत कठोर थी। सूरज देवता भी निकले हुए थे, उनकी चमक जब कठोर बर्फ पर पड़ती थी तो मानो आखों के आगे अंधेरा छा जाता है। अगर हम लोगों ने चश्मा नहीं पहना होता तो लगभग हम अंधे ही हो जाते।

सियाचिन ग्लेशियर में कुल चार पड़ाव आते हैं बेस कैम्प-1 से लेकर लास्ट कुमार पोस्ट तक (16000 फीट की ऊंचाई) है, बेस कैम्प-2 और 3 से कुछ मैम्बर की तबीयत खराब हो जाने के कारण उनको वापस भेज दिया गया। कुमार पोस्ट जो कि आखिरी सियाचिन ग्लेशियर किसी भी भारतीय को वहां तक जाने की ही परमीशन है। चलते-चलते लगभग बुरा हाल हो गया था, सभी का आक्सीजन लेवल भी कम हो रहा था, हिम्मत भी जवाब दे रही थी। किसी तरह हम 11 लोग ही वहां तक जा सके। रात का तापमान माईनस 36 तक पहुंच चुका था लेकिन जिस जगह हमें ठहराया गया उसके अंदर का तापमाप थोड़ा ठीक था, किसी तरह रात गुजारी, सो तो कोई भी नहीं पाया, बार-बार नींद भी खुल रही थी। बड़ी मुश्किल से दिन निकला तो जान में जान आई। लेकिन फिर वही मन में डर कि वापस भी उन खतरनाक रास्तों से जाना है जिस पर चल कर हम कुमार पोस्ट तक आए। सुबह सभी आर्मी अधिकारियों व आर्मी जवानों को सैल्यूट करके वापसी की तैयारी की। सच में वहां तक जाना और आना ही अपने आप में एक हिम्मत का कार्य है। हम लोग तो एक रात में ही थक चुके थे। वहां पर इन जवानों को 3 महीने रुकना होता है सच में इनकी हिम्मत को सलाम।

उत्तर रेलवे व जम्मू राज्य से मैं अकेली महिला थी जो कि सियाचिन ग्लेशियर की आखिरी पोस्ट जो कि कुमार पोस्ट थी वहां तक पहुंची थी मेरे लिए यह एक गर्व की बात थी।

वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी
उत्तर रेलवे, बड़ौदा हाउस

गुजरा ज़माना

मोहम्मद उस्मान

मुझे फिर आज वो गुजरा ज़माना याद आया है,
तेरी बे-लौस उल्फत का फ़साना याद आया है

वो रोशन धूप थी एहसास था गर्मी में ठंडक का,
वो तेरा जुल्फ का रूख से हटाना याद आया है।

वो दिन क्या थे ख्यालों में मेरे दिन रात रहते थे,
सुहाने ख्वाब का वो टूट जाना याद आया है।

पलटकर देखना और देखकर फिर मुस्करा देना,
मुझे वो शाम का मंज़र सुहाना याद आया है।

चमक थी जिंदगी की और तेरी जुल्फ का साया,
मुझे छोटा सा अपना आशियाना याद आया है।

थे जिंदा हम मगर, जिंदा दिली तुमसे ही सीखी थी,
वो सब कुछ सीखकर फिर भूल जाना याद आया है।

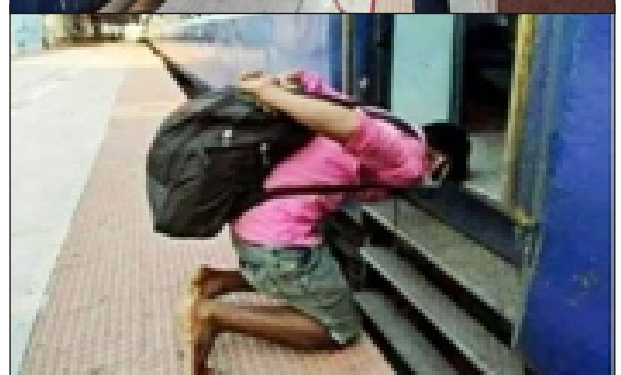
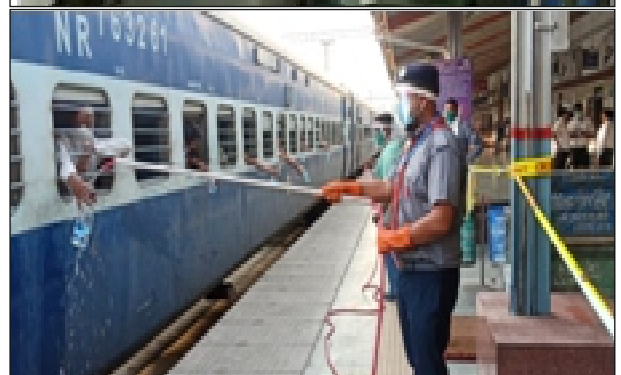
वो दिल के घाव जो भरने लगे थे फिर लगे रिसने,
तेरी आंखों में वो अशकों का आना याद आया है।

बिछुड़कर तुमसे तो मैं जिंदगी का बोझ ढोता हूं,
वो हंसना, खिलखिलाना, मुस्कराना याद आया है।

मिले-बिछुड़े, बिछुड़कर फिर मिले 'उस्मान' होता था,
बिछुड़कर फिर न मिल पाए वो जाना याद आया है।

वरिष्ठ अनुवादक
उ.रे., रेल इंजन कारखाना
चारबाग, लखनऊ

वर्ष 2020 के दौरान कोविड-19 के कारण लॉकडाउन की कठिन परिस्थितियों में रेलकर्मियों के द्वारा किए गए विशेष कार्यों की कुछ झलकियां



राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए प्रधान कार्यालय में आयोजित किए गए विभिन्न कार्यक्रम

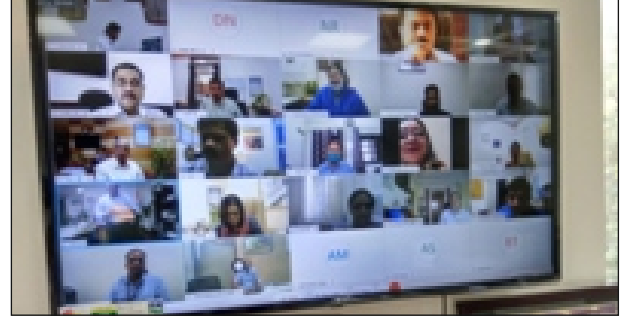
उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय में दिनांक 14.9.2020 से 28.9.2020 तक राजभाषा पखवाड़ा का आयोजन किया गया। कोविड-19 पर भारत सरकार की गाइडलाइन का अनुपालन करते हुए राजभाषा पखवाड़ा कार्यक्रम ऑनलाइन आयोजित किए गए। दिनांक 21.09.2020 को उत्तर रेलवे प्रधान कार्यालय के राजभाषा संपर्क अधिकारियों की एक बैठक ऑनलाइन आयोजित कर राजभाषा प्रगति की समीक्षा की गई। इसमें प्रधान कार्यालय के सभी विभागों के राजभाषा संपर्क अधिकारियों ने भाग लिया।

दिनांक 22.09.2020 को प्रधान कार्यालय में “अधिकारियों के लिए ऑनलाइन हिंदी टंकण प्रतियोगिता” का आयोजन किया गया जिसमें अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसमें श्री अनुज कुमार, सहायक यांत्रिक इंजीनियर/कोचिंग को प्रथम, सुश्री कविता रानी अग्रवाल, सहायक समय सारणि/परिचालन प्रबंधक को द्वितीय और श्री संदीप कुमार सिंह, वरिष्ठ सामग्री प्रबंधक/सामान्य को तृतीय पुरस्कार मिला।



दिनांक 23.09.2020 को महाप्रबंधक महोदय की अध्यक्षता में उत्तर रेलवे क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक ऑनलाइन आयोजित की गई, जिसमें तत्कालीन महाप्रबंधक श्री राजीव चौधरी ने राजभाषा

पत्रिका सरस्वती संगम पत्रिका का विमोचन किया।



प्रधान कार्यालय में राजभाषा पखवाड़े के दौरान दिनांक 23.09.2020 को हिंदी कार्यशाला ऑनलाइन आयोजित की गई। इस कार्यशाला में कर्मचारियों को सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने पर बल दिया गया। इसमें प्रधान कार्यालय के सभी विभागों के कर्मचारियों ने भाग लिया।

दिनांक 24.09.2020 को “ऑनलाइन हिंदी स्लोगन राइटिंग प्रतियोगिता” का आयोजन किया गया। इसमें प्रधान कार्यालय के सभी विभागों के कर्मचारियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में लेखा विभाग के श्री विनोद शर्मा, लेखा सहायक को प्रथम पुरस्कार, कार्मिक विभाग की सुश्री आशनिका का.ई/अधीक्षक को द्वितीय और सुश्री मीनू नागपाल, वरिष्ठ अभियंता/आई.टी. सेल को तृतीय पुरस्कार मिला।



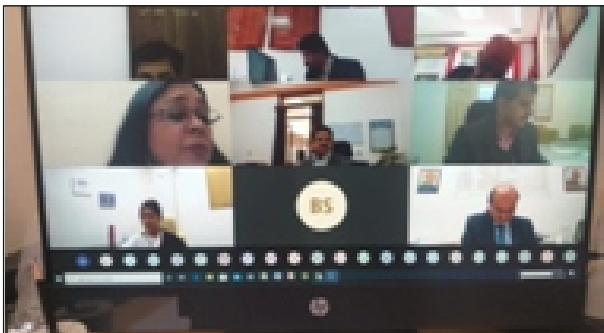
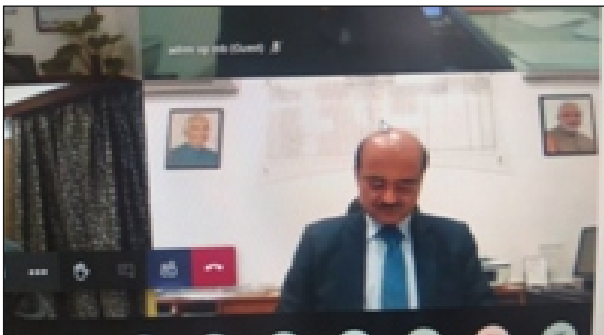
दिनांक 23.10.2020 को प्रधान कार्यालय के सभी विभागों के कर्मचारियों के लिए, दिनांक 28.10.2020

तथा 12.2.2021 को राजभाषा संपर्क अधिकारियों हेतु हिंदी कार्यशालाएं ऑनलाइन आयोजित की गईं।



दिनांक 25.11.2020 को क्षेत्रीय स्तर पर ऑनलाइन हिंदी निबंध प्रतियोगिता, दिनांक 26.11.2020 को हिंदी वाक्प्रतियोगिता तथा दिनांक 27.11.2020 को हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 18.12.2020 को महाप्रबंधक महोदय श्री आशुतोष गंगल की अध्यक्षता में उत्तर रेलवे क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का ऑनलाइन आयोजन किया गया।



संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 11.12.2020 को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया गया.



दिनांक 11.9.2020 को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति ने उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली का निरीक्षण किया (बैठक की झलकियां)



दिनांक 21.8.2020 को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति ने दिल्ली मंडल का निरीक्षण किया (बैठक की झलकियां)



उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली स्थित
'अमीर खुसरो' हिंदी पुस्तकालय एवं वाचनालय का दृश्य

